अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)**

# धर्मवीर भारती की कहानियोंमें चित्रित आधुनिक आयाम

**डॉ संगीता शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी, दयानंद कॉलेज, हिसार**

**भाोध सार**

धर्मवीरभारती के जीवन की आधुनिक परिस्थितियों ने विशेष प्रभाव डाला। बचपन से लेकर उनके पिता की मृत्यु तक की अवस्था को यदि देखें तो उनका परिवार उच्च मध्यवर्ग से निम्न मध्यवर्ग के आर्थिक स्तर तक पहुँच चुका था। विभिन्न कठिनाइयों से भरा, संघर्षपूर्ण जीवन आगे पड़ा थाऋ जिसे भारती ने चुनोती के रूप में स्वीकार किया। इसे हम भारती पर उनके पिता का प्रभाव, शिक्षा ओर संस्कार कह सकते हैं, जिसे भारती अपना 'नायक' कहते हैं। भारती के माता–पिता दोनों आर्य–समाजी थे। परन्तु माँ कट्टर आर्य–समाजी थी तो पिता समझदार आर्य–समाजी। पिता ने आरंभ से ही भारती को जिस प्रकार की शिक्षा दी उससे निश्चय ही उन्हें कठिनाइयों से भरे जीवन को जीने में सहायता मिली होगी। भारती के पिता ने आरंभ से ही उन्हें हर प्रकार की फस्तकें लाकर पने की प्रखरता ओर माधुर्य के स्पर्श से प्रसूत स्नेह–स्निग्धता मेरे भावी जीवन का सम्बल बन गये। कुछ पाने, कुछ खोने का यह दोर मेरे सोच ओर सर्जकता की बुनियाद है।'' भारती के व्यक्तित्त्व का यह द्वन्द्व उनके साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। जहाँ तक माँ–बेटे के संबंधों का प्र न है उसकी झलक हमें उनकी कहानी 'बंद गली का आखिरी मकान' में थोड़ी–बहुत मिलती है। भारती के व्यक्तित्त्व निर्माण में साहित्यिक संस्था 'परिमल' और उनकी साहित्यिक मित्रा–मंडली का बहुत बड़ा योगदान रहा। इलाहाबाद के लगभग सभी नये–पुराने लेखक–कवि उसमें भाग लेते थे। भारती के निर्भीक व्यक्तित्त्व निर्माण में उनके पिता के साथ उनके गुरु डा. धीरेन्द्र वर्मा का प्रभाव रहा। जिनसे बहुत सहारा, निर्देशन ओर प्रोत्साहन मिला उनमें वे माखनलाल चतुर्वेदी ओर ताराशंकर बन्धोपाध्याय का नाम लेते हें।

**मूल भाब्द : किशोर मन छोटी आयु, टूटे हुए लोग, मखमली, साहित्यिक दृष्टि, किरणों के आलिंगन, बुनियाद**

वे आस्कर वाइल्ड से प्रभावित होते हैं परन्तु पाँच–छह साल में वह 'इन्पेफचुएशन' खत्म हो जाता हे। वे शरत्चन्द्र से भी प्रभावित रहे। भारती लिखते हैं– ''एक ओर लेखक था – जिससे हम सभी अपने बहुत प्रभावित रहे हैं, वह थे शरतचन्द्र।'' भारती ने आस्कर वाइल्ड की कहानियों का अनुवाद भी किया है। साहित्यिक दृष्टि से वे अपना झुकाव जयशंकर प्रसाद ओर टाल्सटायकेप्रति मानते हैं। भारती के कहानी संग्रह 'चांद और टूटे हुए लोग' की लगभग आधी कहानियां प्रेम से संबंधित है। ''तारा और किरण''रूपक कथा का विषय भी प्रेम है। '' इन कहानियों में भारती का प्रेम विषयक दृष्टिकोण व्यक्त

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

हुआ है। उनका यह दृष्टिकोण रोमांटिक स्वरूप का है। भारती का किशोर मन छोटी आयु में ही जलपरी के रोमांटिक आकर्षण में बंध गया था।'' 1

उन्होंने स्वयं लिखा है–––'' वह (भारती) अक्सर किसी निर्जन गुलाबी द्वीप सिलाओ से बंद ही किसी बंदिनी उदासी नी जलपरी की कल्पना किया करता था जिसे हुआ है तलवारों से जंजीरी काट कर आजाद कर देगा फिर शैली फैली मखमली बालू पर दोनों रंग बिरंगी सीपीयू और मूंगे मोतियों से खेलेंगे जिंदगी भर, साथ साथ जिंदगी भर। '' 2 भारती के मन पर इस कवि कल्पना का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

'' तारा और किरण की नायिका वरुणा 'जलपरी' ही है। वह सिलाओ से बंधने के स्थान पर अपने रानीपुर के अभिशाप के कारण सरकार से जल प्राचीरों में बंदिनी है। उसे नायक युवक ने मुक्त किया है। उसके प्रेम के उतापमय स्पर्श के कारण हिम शीला रूप में बंदिनी बनी नायिका के हिममय अंग गर्ल जाते हैं। प्रेमी युवक भी प्रेम की जलन से जलकर चमकीले तारे के रूप में परिवर्तित होकर लहरों को चूमने का प्रयास करता है। लाइका ही सूर्य की प्रातः कालीन किरणों के रूप में कार्य को अपने आलिंगन में भरने के लिए बढ़ती है, किंतु उन किरणों के आलिंगन में आने से पहले ही वह तारा निराशा के देश को चला जाता है? यह दूसरी कल्पना निराशा से भरी हुई है। 'तारा और किरण'कहानी में प्रेम का स्वरूप विशद करते हुए कहा गया है कि लव1 के आश्रित रहने वाला प्रेम नश्वर होता है। ' प्रेम का आश्रित प्रेम'ही अमर होता है। इस प्रेम में 'आत्मदान' होता है। '' 3

कला : एक मृत्यु चिह्न का नायक भी कहता है–– ''कलाकार... प्रेमिका से नहीं, प्रेम से प्रेम करता है।'' 4

इसी प्रकार स्वप्न श्री और श्रीरेखा की स्वपन श्री कहती है––''जिसे अटूट प्यार होता है..., उससे कुछ भी लेने की इच्छा नहीं होती।'' यह दृष्टि सूक्ष्म और रोमांटिक प्रेम की दृष्टि है। इस प्रकार के प्रेम में नारी पूजा की वस्तु होती है। इसलिए 'पूजा' कहानी का नायक नक्षत्र कहता है––– '' तुम्हारा स्नेह है मेरे लिए केवल प्रति स्नेह है कि नहीं पूजा की वस्तु रहा है। ''5

पूजा की इसी भावना के कारण अस्थचर्ममय देह से युक्त व्यक्तित्व की हमेशा उपेक्षा की गई है। इसलिए कलाकार कहता है–– ''व्यक्तिगत सीमा बंधनों से परे प्रेम की अनंत समष्टि को साकार रूप देकर ही कलाकार उसकी पूजा करता है।''6

इसलिए 'चांद और टूटे हुए लोग' का राजेश कहता है––''वह लड़की फूल सी पवित्र है ... ...। आदमी दूर से भी फूल को देख सकता है।'' 7

प्रेम का यह जीवन दर्शन कठोर संयम के कारण प्रेम की कुलटा की ओर मोड़ने के लिए विवश हो जाता है। परिणाम स्वरूप विवाह में परिणत नहीं हो पाता। इसके कारण प्रेम और विवाह का द्वैत व्यक्तित्व को विभाजित कर देता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

'चांद और टूटे हुए लोग''का पात्र राजेश कभी गलती से यह सोचता है––''नारी और पुरुष के संबंधों में अस्वस्थ रोमानियंस निकालकर अगर एक स्वस्थ मानवीय हमदर्दी रहने दी जाए, जिसके सहारे एक सोच सामाजिक जीवन बन सके तो बहुत समस्याएं सुलझ जाए। ''8 लेकिन न जाने की संस्कारों के प्रभाव के कारण मैं यह कह उठता है––''मैं प्रेम की रोमानी अंस को नहीं मानता। फिर भी लगता है उसे अस्वीकार भी नहीं कर सकता।'' 9

'' वह स्वीकार ही कैसे कर सकता है, क्योंकि भारतीय प्रेम के सूक्ष्म और रोमानी इस ग्रुप को मनुष्य की सास्वत भख जो मानते हैं।''10

इस प्रकार के आत्मिक प्रेम की प्रवचनामय मान्यता के कारण व्यक्ति कुंठित होकर टूट जाता है। व्यक्ति का काम व्यक्ति के लिए बार बार उभर कर प्रेमी को आत्मग्लानि से भरकर कुंठित कर देता है। परिणाम स्वरूप ने शरीर तृप्त होता है और आत्मा संतुष्ट होती है। यदि मानवीय धरातल के आधार से रहित रोमांटिक प्रेम या तो 'तारा और किरण' के नायक के समान व्यक्ति निराशा के देश का निवासी बनने के लिए विवश हो जाता है या फिर आत्मिक प्रेम की प्रतिक्रिया के कारण वह प्रेम को मिथ्या और नारी को प्रबंध ना समझने वाला 'कुबेर' कहानी का नायक बन जाता है। यहां प्रेम के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों  पहलूअओं को दर्शाया है।

'चांद और टूटे हुए लोग'संग्रह कहानियों में प्यार के अन्य स्वरूपों का भी समावेश हुआ है। कहानी मरीज नंबर सात के प्रेमी और प्रेमिका को समाज विरोधी एकांत प्रेम के शिकार दिखाया गया है। अन्य कहानी कुलटा में कामवासना के कारण निवेदक का भाई लाली को उल्टा समझ लेता है। युवराज कहानी का नायक झूठे आत्म स्वाभिमान को अहंकार में गर्मी परमा गिरोह का शिकार बन जाता है। इसी प्रकार धआं कहानी में लोग जली हुई वेश्याओं की बस्ती में इसलिए पहुंच जाते हैं ताकि वे उधरी ही नंगी वेश्याओं को देख सकें। कफन चोर कहानी में करीम यह सपना देखता है कि खुदा उसकी सुंदरी बेटी से कहता है––''इस हसीना का नाम हुरों में दर्ज कर लो।'' 11

'शिंजीनी 'कहानी में नायिका सिंजीनी तृप्ति में विश्वास करती है और नायक किंजल्क जीवन की पूर्णता को सत्य मानता है। यहां प्रेम और काम के संबंधों का चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त मानव संबंधों का चित्रण अन्य शेष कहानियों में हुआ है।

प्रेम पर काल्पनिक कहानियों के विपरीत यह कहानियां यथार्थपरक है। '' भारती के किशोर मन को सन् १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन विफलता ने आंदोलित करके छोड़ दिया था। इसी प्रकार सन १९४३ के बंगाल के अकाल के कारण उनका मन पीड़ा से कराह उठा था। उन्होंने आगे चलकर बंगाल के अकाल के संबंध में अनेक कहानियां लिखी ,थी जो 'मुर्दों का गांव'के नाम से प्रकाशित हुई थी।''12

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

इस संकलन की भमिका में उन्होंने लिखा था––''यदि हम भख में अंगारे जवा जाने की शक्ति नहीं रखते, तो हम इसी लायक हैं कि हमारी ना से नाप दानों में सड़े और उन पर घिनौनी मक्खियां भिन्नभिन्नाएं।'' 13

यह अकाल विषयक कहानियां जो 'चांद और टूटे हुए लोग'कहानी संग्रह में 'भखा ईश्वर ' शीर्षक से द्वितीय खंड के रूप में प्रकाशित हुई है। अकाल संबंधी इन दर्दनाक कहानियों में शासन और धर्म आदि की व्यवस्थाओं पर कठोर बैंक के किए गए हैं। को जीवन की प्राथमिक आवश्यकता बताया है लेकिन इस आवश्यकता की पूर्ति करने की ओर से सरकार पूरी तरह उदासीन है। भखे लोग भी निराश है क्योंकि उन्होंने बिना सरकार की असुविधा का ध्यान रखें ज्यादा से ज्यादा संख्या में शमशान यात्रा का निश्चय कर लिया था''कहानी में सेना को रसद पहुंचाने वाले रास्तों पर भी जहां–तहां मुर्दे पड़े रहते थे। ऐसी ही एक रसद पहुंचाने वाली नारी के नीचे एक भखा बच्चा आ जाता है। किस पर यहां के एक गोरे शासक ने कहा––''बच्चे को दबने से पहले सीखना चाहिए था। दबने के बाद सीखना बच्चे की नादानी है।'' 14

भखे लोग भख से विवश होकर कुछ भी गला सड़ा खा लेते थे। और एजे के शिकार बन जाते थे। और तो और इन्हें सरकारी डॉक्टर अस्पताल में भर्ती भी नहीं करता था क्योंकि यदि वे अस्पताल में मर जाएंगे तो इस कारण से उसके अस्पताल की बदनामी हो जाएगी। कवि भारती ने इन कहानियों के माध्यम से यथार्थता को दर्शाया है। ''भारती ने अपनी अकाल संबंधी कहानियों में समाज के 100 सेठों पर भी देंगे किए हैं। '' 15

एक और गरीब, असहाय बच्चे भख और प्यास से दम तोड़ रहे थे तो वहीं दूसरी ओर सेठों के बच्चों को मना मना कर होर्लिक्स पाया जाता है। दुकानदार लोग अनाज की कमी का लाभ उठाकर सस्ते खरीदे गए अनाज को दोगुने तिग्ने भाव से भबेच रहे हैं। और भखे व्यक्ति के पैसों को लेकर अपने खोटे सिक्के लौट आते हुए कहते हैं–इसी अधर्म के कारण अकाल पड़ा है। भखों के मर जाने के बाद भी उन्हें यह शिकायत है कि

''जहां देखो थ कमबख्त मक्खियों की तरह मर जाते हैं। आने जाने का रास्ता तो कब से कम छोड़ दें . .. .....'' । 16

इसी प्रकार कपड़े की कमी के कारण भखे लोग सर्दी से बचने के कारण चोरी करना शुरू करते हैं। 'कफन चोर'कहानी का बूढ़ा करीम अपनी ठिठुरती हुई बेटी से करता है––''हम गुलाम और गरीब . ...... नंगे रहते हैं। जानती है क्यों, ताकि अभी लोग हमारे नंगे कंधों पर आसानी से हाथ जमकर सोने और चांदी की सीढ़ियों पर चढ़ सके।''17

भख से मरे लोगों को खाकर सियार मोटे हो गए हैं। इन शहरों के समान ही सेठ लोग भी मोटे हो गए हैं। यहां पर सियार के माध्यम से उन दुकानदारों बनियों पर व्यंग्य किया गया है जो गरीबों को ठगते

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

हैं। एक सियार सोचता है––''यह.......... सेठ इतने मोटे कैसे होते हैं। मैं समझता हूं शायद मैं जिंदगी भर आदमी का गोश्त खाते होंगे।''18

आदमी का गोश्त खाने की डींग मारने वाले इस प्यार को उसकी स्त्री कहती है––''यह लोग कहीं आदमी होते हैं........ घुट घुट कर मिट जाने वाले कहीं आदमी होते हैं।''19

सच तो यही है कि लोग अपने कंधे पर मौत ढोते हैं । अगर यह पठानों की तरह अपने कंधों पर जिंदगी ढोते तो गोदामों में बंधन आज लूट कर खा लेते। अकाल संबंधी इन कहानियों में धर्म को आड़े हाथों लिया गया है। हिंदू या मुसलमान कहानी में बताया गया है कि किस प्रकार अकाल पीड़ितों की सहायता पहुंचाने वाले लोग अपने सहायता के कार्य में भी धर्म का भेदभाव भुला नहीं पाए हैं। सरकारी भी भख से मरे हुए लोगों के संबंध में परेशान होती है तो कभी–कभी उन्हें समझ नहीं आता कि मुर्द्दे को जलाएं या दफनाएं। 'भखा ईश्वर'कहानी में वर्णन किया गया है कि भख से मरने वालों को स्वर्ग का दरवाजा बंद मिलता है। लेकिन इस कहानी में तो शंभ के ईश्वर को उसकी हालत देखकर चौकीदार स्वर्ग में घुसने ही नहीं देता । ''अकाल संबंधी इन कहानियों के बाद ऐसी कहानियां है जिनमें प्रेमतर मानव संबंधों को अभिव्यक्ति मिली है।''20

'नारी और निर्वाण'कहानी में मातृत्व को निर्वाण श्रेष्ठ कहा गया है।'कुलटा' कहानी में मातृत्व की पीड़ा व्यक्त हुई है। इसी प्रकार 'भखा ईश्वर'कहानी में माता के वात्सल्य भाव को द्रोही का केंद्र बिंदु बनाने का विचार व्यक्त हुआ है। 'हरिनाकुस और उसका बेटा'।

देश भक्ति की कहानी है। 'धुआं' कहानी में ''कुछ मजा नहीं आया ! क्या आग लगी ? कोई आग में आग है।''21

इस कहानी में कहने वालों की बर्बर स्वरूप को प्रकट किया गया है। 'अगला अवतार' कहानी में ढोंग बाजी को व्यंग्यात्मक रूप में पेश किया गया है। '' 'चांद और टूटे हुए लोग' की कहानियों में उपस्थित किया गया सामाजिक यथार्थ आदर्श के संकेत से युक्त है। इन कहानियों में सामान्यतः निबंध एवं मध्य वर्ग का चित्रण हुआ है। समाज की आर्थिक राजनीतिक धार्मिक आदि परिस्थितियों की आलोचना करते हुए लेखक ने समाज परिवर्तन की प्रेरणा दी है। ''

मशहूर लेखक धर्मवीर भारती के एक कहानी संग्रह का नाम है''बंद गली का आखिरी मकान''धरम वीर के इस कहानी संग्रह की काफी चर्चा हुई है। पुस्तक में दिल्ली के दरियागंज इलाके कि जिस एक बंद गली के आखिरी मकान की चर्चा हुई वह मकान था'साहित्यिक हंस पत्रिका का कार्यालय'।

'बंद गली का आखिरी मकान' कहानी संकलन में सन् १९५५ से लेकर सन् १९६६ तक के 15 वर्षों की 4 कहानियां संकलित की गई है। गुलकी बन्नो, सावित्री नंबर दो , यह मेरे लिए नहीं, बंद गली का आखिरी मकान है। भारतीय कहानियां पिछले संकलनों की कहानियों से अधिक विकसित कला चेतना

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

की निर्देशक हैं। कहानियों में उनकी कला पूरी तरह से विकसित दिखाई पड़ती है। ''इन कहानियों के लेखन काल में ही भारती ने'सारिका'(१९६४) मैं'गोरी नगरी काले साये' कहानी लिखी थी।''

भारतीय की एक अन्य रूपक कथा'एक रोटी चमकने वाली मछली की कहानी के नाम से' 'ठेले पर हिमालय'पुस्तक में संकलित है।'बंद गली का आखिरी मकान'मैं संकलित कहानियां इनी–गिनी है, इसलिए उनका अलग–अलग स्वतंत्र रूप से विवेचन यहां किया जा रहा है।

'बंद गली का आखिरी मकान'कहानियों का कैनवास बड़ा व्यापक है। इस फैलाव का ही कारण है कि लेखक आसपास की सभी चीजों को समेटकर चलायमान दिखाई देता है और कहानियों में परिवेश गत प्रमाणिकता का विश्वास क्षीण नहीं होने देता। ''पत्रों का घना–बसा संसार, जीवन के प्रति उनकी ललक और उत्साह, उनके अभाव और जीवन के छोटे–छोटे सुखों के लिए उनका संघर्ष आदि सारी चीजें मिल कर इन कहानियों की पृष्ठभमि को जीवंत एवं आकर्षक बनाती है लेकिन लेखक की रोमानी और भावुक दृष्टि एवं संस्कार इन कहानियों के प्रभाव और सार्थकता के आगे हमेशा ही प्रश्नचिन्ह लगाते दिखाई देते है। और आधुनिक कहानी–रचना के संदर्भ में इन्हें मात्र इतिहास की वस्तु बना कर छोड़ देते हैं।''
22

बंद गली का आखिरी मकान संत की दूसरी कहानी सावित्री नंबर दो है कहानी का शीर्षक हमारा ध्यान सावित्री नंबर एक की ओर आकृष्ट करता है और नंबर दो कि सावित्री को जाने के लिए मन में उत्सुकता जगाता है। इसके अतिरिक्त उसी की नाम राशि की दूसरी सावित्री के तुलनात्मक विश्लेषण की ओर इंगित प्राप्त होता है। कहानी सावित्री नंबर दो कर्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती है। पर अंत में पीड़ा की अनुभति छोड़ जाती है। सती सावित्री ने अपने पति सत्यवान को मृत्यु से बचाने के लिए यमराज से लड़ पड़ी थी। लेकिन नंबर दो कि सावित्री मैं तो इतनी पवित्र है और ना ही निष्ठा वही है कि वह मृत्यु को जीत सके। इसके विपरीत है कि वह उसके पति को अपने पास बुलाने में इतना विलंब क्यों कर रही है फुल विराम वह स्वयं ही अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा नहीं कर रही अपितु से संबंधित सभी लोग उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हैं।

विवाह के बाद सावित्री को उसकी सास ने आशीर्वाद देते हुए कहा था–– '' जैसा नाम वैसी बनो बहू! '' सावित्री ने भी वैसा ही बनने का बहुत प्रयत्न किया बहुत जद्दोजहद की और इसी उत्साह के आवेश में जम्मू कैप्टन मुरारी ने उसके कंधे पर हाथ रखा तो उसने कस के तमाचा जड़ दिया। लेकिन परिस्थितियों ने कुछ ऐसा मोड़ दिया की सावित्री ने अपने ही पति की मौत तक की कामना की थी। इसलिए तो आता विश्लेषण करते हुए इस दूसरी सावित्री ने सती सावित्री को संबोधित करते हुए कहा–– '' मृत्यु की यह दूसरी घटना है सावित्री बहन, तुम्हारी गाथा से बिल्कुल पृथक।''

इस मृत्यु गाथा में सत्यवान की मृत्यु गाथा से स्पष्ट रूप से यह भेद है कि सावित्री की मौत सत्यवान की मौत के समान आसान मौत नहीं है जिसमें किसी प्रकार की जटिलता नहीं हो और ना ही सत्यवान

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

के समान मृत्यु के द्वारा गौरव भरी वापसी है। विपरीत इसके यह हार्ड बास के बने व्यक्ति की मृत्यु गाथा है, जिसे मृत्यु की मर्मांतक परीक्षा करनी पड़ती है। इस प्रकार की प्रतीक्षा की पीड़ा से सत्यवान सर्वथा अछूता रहा था सावित्री ने मृत्यु की चेतना के समक्ष प्रथम अपने असली अस्मिता के स्वरूप का अनुभव किया। इसलिए उसने कहा है –– '' मृत्यु की उस चेतना के समक्ष पहली बार मुझमें असली मैं जागा। ''

जब सावित्री असाध्य रोग के चंगुल में फंस जाती है तब उसमें मृत्यु की चेतना उत्पन्न होती है। और वह अपने पूर्व जीवन अर्थात जो सुख में बचपन उसने बताया था उसे याद करती है। तब उसे मां बड़े प्यार से 'सबितरा' कहती थी। और शादी के बाद वह अपने पति के गले की खिलती महकती वरमाला बन गई थी। मायके की 'सावितरा'पति के लिए प्यारी 'सावी'बन गई थी। सारी कोई विशेष सुंदर नहीं थी लेकिन पति के प्यार से वह पूरे घर में मोर की तरह पंख फैलाकर उड़ती ठुमकती रहती थी। लेकिन हड्डी हड्डी को गलाने वाले असाध्य रोग के कारण शादी के दूसरे साल ही परिस्थितियों में परिवर्तन आरंभ हो गया।

**निश्कर्श**

आधुनिक बोध इनके साहित्य में सर्वत्र व्याप्त था। वसंत–खंड देखने को कहते हैं ओर भावुक होकर यहाँ तक कहते हैं कि – ''मुझे भी कभी–कभी लगता है कि मैं समय कोफूलों केकेलेण्डर में बाँध दूँ, दिशाओं कोफूलों की पंखुरियों में बसा दूँ, मन के हर आरोह–अवरोध को ओर भावना के हर आवेग को फूलों की पर्तों में दबा दूँ ओर यह निखिल सृष्टि फूलों का जाल बन जाये और मैं इसका रसमर्म पाने के लिए उतना ही आकुल हो उठूँ जितने जायसी ... 'केहि विधि पावों भौंर होइ?' '' 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का आरंभ ही वे इलाहाबाद शहर की बनावट, वहाँ की जिन्दगी, रहन–सहन के साथ ही उसकेप्राकृतिक सोन्दर्य के वर्णन से करते हें ओर अभिभत होकर कह उठते हें कि – ''लगता हे कि प्रयाग का नगर–देवता स्वर्ग–कुंजों से निर्वासित कोई मनमोजी कलाकार है जिसके सृजन में हर रंग के डोरे हैं।'' अपनी कविता संग्रह 'सपना अभी भी' में भी उन्होंने इलाहाबाद को लेकर अनेक कविताएँ लिखीं हैं। इलाहाबाद भारती का एक मर्मस्थल हे। अपने 'शब्दिता' निबंध संग्रह में उन्होंने 'इलाहाबाद की गर्मियों की सृजनात्मकता' पर निबंध ही लिख डाला है, जिसमें उन्होंने पूरे इलाहाबादी वातावरण ओर इलाहाबादी खास व्यक्तित्त्व को उभारा हे। इसका कारण यह हे कि उनके बचपन केशोर्य ओर जवानी की कितनी ही स्मृतियाँ इस शहर से जुड़ी हुई हैं।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

1. धर्मवीर भारती साहित्य के विवा आयाम डॉ हुकुमचंद राजपाल पृष्ठ 101
2. डॉ धर्मवीर भारती साहित्य के विवा आयामडॉ हुकुमचंद राजपालपृष्ठ 101
3. धर्मवीर भारती की साहित्य साना संपादक पुष्पा भारती पृष्ठ ११८

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

4. चांद और टूटे हुए लोगधर्मवीर भारती पृष्ठ २६३
5. धर्मवीर भारती का साहित्य–सृजन के विवि रंगडॉक्टर चंद्रभानु सोनवाणे पृष्ठ १२३ ।
6. धर्मवीर भारती का साहित्य–सृजन के विवि रंगडॉक्टर चंद्रभानु सोनवणेपृष्ठ १२३
7. दूसरा सप्तकसंपादक अज्ञेयपृष्ठ १७७
8. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ २३६
9. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ २१३
10. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारती पृष्ठ१५६
11. चांद और टूटे हुए लोगपृष्ठ ७१
12. चांद और टूटे हुए लोगपृष्ठ ५६
13. चांद और टूटे हुए लोगपृष्ठ ६८
14. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ ७१
15. प्रगतिवादः एक समीक्षाडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ ८५
16. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ ११४
17. धर्मवीर भारती का साहित्य–सृजन के विवि रंगडॉक्टर चंद्रभानु सोनवाणेपृष्ठ 22
18. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ २६२
19. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ १२६
20. धर्मवीर भारती का साहित्य–सृजन के विवि रंगडॉक्टर चंद्रभानु सोनवाणेपृष्ठ १२६
21. चांद और टूटे हुए लोगधर्मवीर भारतीपृष्ठ १०३
22. चांद और टूटे हुए लोगडॉ धर्मवीर भारतीपृष्ठ ११३